अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

निराला साहित्य में नारी चेतना के विविध सोपान

डॉ0 हसीना बानो, एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभागाध्यक्ष
हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज।
ई0मेल– haseena15bano@gmail.com

व्यक्ति जिस समाज, जिस दे”ा और जिस युग में जीता है, उस युग की अनुभूतियों को सहेज कर यथार्थता से पूरित अपने ढंग से उन अनुभूतियों को, ऊभ–चूभ झेलती समस्याओं को निराले ढंग से अभिव्यक्ति करता है। निराला भी ऐसे विरले साहित्यकार हैं जो अपने युगीन परिस्थितियों से घिरे हुए समाज के विविध रूपों को देखा और उसे अपने साहित्य का विषय बनाया। उनके जीवन में विभिन्न अनुभूतियां ही सबल रही हैं, उन्होंने अपने युग के समाज में प्रतिदिन जमींदारों के अत्याचार से पीड़ित शोषित जनों का क्रन्दन सुना था, कृषकों की दयनीय स्थिति, बेकारी की समस्या, उपेक्षित नारियों की दीन–हीन द”ाा, अनैतिकता, वे”या समस्या, जातिवाद, सम्प्रदायवाद तमाम सामयिक प्र”नों को क्रूर विडम्बनाओं को देखा और समझा जो सामाजिक, मान्यताओं की अभिव्यक्ति, समाज के यथार्थ को और समाज की भोगी हुई अनुभूतियों को निराला साहित्य के विभिन्न विधाओं– कहानी उपन्यास काव्य, रेखाचित्र आदि में देखा जा सकता है। उन्होंने दीन–हीन जनों को समाज में सही स्थान दिलाने के लिये अपने कथानकों की सृष्टि की, उनके चरित्र उनके युगबोध को स्पष्ट करते हैं। समाज की विषम समस्याओं का आंकलन उनकी कहानियों में कुलीन ब्राह्मणों के अहंकार लोभ और उनकी चारित्रिक दुर्बलता पर व्यंग है। एक तरफ सामन्ती व्यवस्था पर कुठारघात किया है, वहीं पर दूसरी तरफ नारी समस्या के समाधान हेतु उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये है।

युग का जैसा बोध निराला को हुआ था उसी के आधार पर उन्होंने अपनी कुछ सूक्ष्म धारणायें बनायी जो एक क्रान्तिाकरी विद्रोही विराट ओजस्वी व्यक्तित्व के रूप में आज हम विचार–विम”ार्ा कर रहे हैं।

निराला नारी की दीन–हीन द”ाा का उत्तरदायी पुरुष की पा”ाविक वृत्ति को ही मानते हैं। उन्होंने स्वावलम्बन में असमर्थ, पुरुष की इन दासियों को स्वतन्त्रता का जीवन बिताने की प्रेरणा दी है उन्हें ज्ञान ि”ाक्षा सम्पन्न करने की आव”यकता पर बल दिया है। मनुष्य एक–दूसरे का पराधीन बनने का, सुख भोगने का अभिलाषी है, उसने नारी को पुरुष का व”ावर्ती बनाकर उसकी स्थिति दयनीय बना दी है, न जाने कितने अत्याचार किये जाते हैं और वह चुपचाप आंसुओं को पी कर रह जाती है निराला को यह बाता उचित नहीं लगती थी कि पुरुष तों विधुर हो कर दूसरा विवाह कर सकता है किन्तु स्त्री के लिये यह मार्ग बन्द है, वैधव्य के लिये बनाये गये नियम उनकी क्षुद्रता पर निराला का मन विद्रोह

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

करता रहा है। विधवा समस्या को लेकर निराला ने 'विधवा' शीर्षक कविता की रचना की। निराला की 'विधवा' कविता इसका प्रमाण है।

अपने लघु कथाओं में भी उन्होंने विधवा समस्या का निराकरण करने के लिये अपने कथानकों को संगठित किया। ''जयोतिर्मयी'' शीर्षक कहानी में विधवा–जीवन की व्यथा का सुन्दर चित्रांकन हुआ है।

निराला जी ने समाज में पतिता समझी जाने वाली वे''याओं में नारी गरिमा का द''र्न किया और उन्हें प्रतिष्ठित करने के लिये अपनी कृतियों में नायिका का आसन प्रदान किया। ''अप्सरा'' शीर्षक उपन्यास में कनक का चरित्र और कनक की माता का चरित्र वे''या के उदात्त रूप को प्रकाि''त करता है। ''क्या देखा'' कहानी में हीरा नाम की वे''या का चरित्रांकन उसकी समस्या को नये ढंग से उपस्थित किया है, प्रेम की वेदी पर उत्सर्ग हो जाने की महती भावना इसमें रूपायित है। दहेज प्रथा पर भी कुठाराघात किया है, निराला ने अन्तर्जातीय विवाह को भी मान्यता दी है, ''पद्मा और लिलि'' कहानी की नायिका पदमा राजेन्द्र से प्रेम करती है, राजेन्द्र की जाति पदमा की जाति से भिन्न है। दोनों के विवाह बन्धन में पदमा के पिता सामाजिक मर्यादा और भय के फलस्वरूप बाधक बनते हैं। पिता की मृत्यु के प''चात दोनों का विवाह हो जाता है और इस प्रकार अन्तर्जातीय विवाह को स्वीकृति मिलती है। निराला नारी ि''क्षा के प्रबल समर्थक थे उनका विचार था कि ''स्त्रियां यदि अनपढ़ रह गयीं, यदि उन्हीं की ज़बान न मंजी, तो बच्चा पढ़कर भी कुछ नहीं कर सकता, मौलिकता का मूल्य बच्चे की माता है। भाषा का सुधार, सं''ोधन स्त्रियां ही करती हैं। सन् 1934 ई0 में ही निराला ने यह अनुभव कर लिया था कि स्त्री को पुरुष के साथ रहकर प्राचीन रूढ़ियों से ऊपर उठना चाहिए तथा ज्ञान और कर्म की दृष्टि से उसे पुरुष के समान ही अग्रणी बनना चाहिए।

निराला ने सामाजिक समस्याओं को लकर ही कहानियों की रचान की। विधवा विवाह, अछूतोद्वार, वे''या जीवन आदि विविध विषयों को लेकर ही उन्होंने अपनी कहानी के कथानकों की रचना की। यथार्थ का चित्रण निराला की कहानियों की वि''िष्टता है। उन्होंने बाइस कहानियों के माध्यम से कहानी संग्रह के रूप में पांच संकलन प्रकाि''त किया। ''लिलि'' शीर्षक कहानी संग्रह सन् 1923 में हुआ। इस संग्रह में आठ कहानियां हैं– पदमा और लिलि, ज्योतिर्मयी, कमला, श्यामा, अर्थ प्रेमिका परिचय, परिवर्तन, हिरनी। सन् 1935 में ''सखी'' शीर्षक कहानी संग्रह प्रकाि''त हुआ। इस कहानी संग्रह मे आठ कहानियां हैं– सखी, राजा साहब को ठेंगा दिखाया, देवी, चतुरी–चमार, न्याय, स्वामी शारदा नन्द जी महाराज और मैं, सफलता, भक्त और भगवान। सन् 1941 में ''सुकुल की बीबी'' शीर्षक कहानी संग्रह प्रकाि''त हुआ जिसमें चार कहानियां संकलित है– सुकुल की बीबी, गजानन्द शास्त्रिणी, कला की रूप रेखा, क्या देखा। इस कहानी ''सखी'' शीर्षक कहानी संकलन को पुनः सम्पादित करके एक नया

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

संकलन ''चतुरी–चमार'' शीर्षक से अभिहित किया गया। सन् 1948 में इस कहानियों के संकलन को ''देवी'' शीर्षक से प्रकाि"त किया गया। इन कहानियों में यथार्थता का सघन वर्णन हुआ है।

नारी जाति का उत्कर्ष निराला की हर विधाओं में देखने को मिलता है, नारी जाति के भावी उत्कर्ष, सामाजिक द"ाा–दि"ाा को लेकर ही निराला ने अपने उपन्यास ''अलका'' का सृजन सन् 1933 में किया। जिसमें नारी चरित्र प्रधानता को महत्व देते हुए सामाजिक जीवन की करुण झांकी प्रस्तुत की। इसके पूर्व 1931 में अप्सरा और 1936 में ''निरुपमा'' उपन्यास में भी नारी के ही संघर्ष"ाील जीवन का चित्रांकन है। जिसके सम्बन्ध में **रामखेलावन चौधरी** ने लिखा है– निराला के तीनों उपन्यासों की कथायें नारी जीवन के संघष से सम्बन्ध रखती है। ''अप्सरा'' में वे"या पुत्री कनक को अपने जन्म से सम्बन्धित परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ता है वह अभूतपूर्व सुन्दरी कीचड़ में खिले हुए कमल के समान है, उसका चरित्र अग्नि के समान पवित्र है। और वह कुलबधु के समान एक सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहती है। ''अलका'' में एक सद्यः विवाहिता बाला ''"ोभा'' की कहानी है। उसका पति ि"ाक्षा प्राप्त करने के लिए बम्बई चला जाता है और इस बीच में माता–पिता की महामारी के प्रकोप से मृत्यु हो जाती है। निराश्रित शोभा गांव में जमींदार के कुचक्र का ि"ाकार हो जाती है। इसी तरह ''निरुपमा'' में भी एक कोमलांगी, सुि"ाक्षित और सत्यचरित्रता बंगाली बाला जो अपने घर के भीतर ही अपने मामा और भाई के कुचक्र और 'ाड्यन्त्र का ि"ाकार बनती है।

निराला के इन उपन्यासों में नारी जीवन की समस्या, प्रेम–विवाह की समस्या, शोषण दोहन की समस्या, जातिगत, ि"ाक्षा की समस्या को उभार कर उन्हें उत्कर्ष के चरम सीमा पर लाने का अथक प्रयास है। जो आज भी समाज में यह एक सवाल बनकर चुनौती दे रहा है। वही शोषण वही दोहन मजदूरी आज भी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती नजर आ रही है जिस कविता को निराला ने 1923 में ''तोड़ती पत्थर नजर'' शीर्षक से लोगों को जागरुकता का, स्त्री चेतना का सन्दे"ा दिया–

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैने इलाहाबाद के पथ पर, वह तोड़ती पत्थर
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
गुरू हथौड़ा हाथ
करती बार–बार प्रहार

वह स्त्री जो कोमल कमनीयता की साक्षात मूर्ति है क्या आज हम उसे पूरी तरह दूर कर पायें हैं? निराला को उस सन्दे"ा को हमें पूरी तरह सार्थक करना होगा उन दलित श्रमित मजदूरनी को उनका स्थान दिलाने के लिये पूरी तरह ि"ाक्षित करना होगा। निराला को साहितय नारी समस्या पर नारी

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

उत्कर्ष के लिये अपने युग की पुकार को देखते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है जैसे उन्होंने अपने साहित्य काव्य सुन्दरी को एक नारी का ही सुन्दर रूप बनाकर चार चांद लगा दिया हो।

निराला ने नारी चरित्र को उदात्त मानवीय मूल्यों से अभिमण्डित किया है। जहां तोड़ती पत्थर कविता में मजूदरनी के श्रम गौरव का चित्रण किया है वही 'बहू' न केवल सौन्दर्य मूल्यों से अभिमण्डित है वरन चारित्रिक मूल्यों का भी प्रतिनिधित्व करती है। सौन्दर्य की अपरिमित स्रोत के साथ–साथ वह पतिपरायणता, सात्विक प्रेम, शान्ति और सुख देने वाली है।

निराला की आध्यात्मिक संवेदनाओं से पूरित कविताओं में नारी का दिव्य रूप चित्रित है। पंचवटी प्रसंग में सीता ''आदि शक्ति'' के रूप में चित्रित है–

नारियों की महिमा– सतियों की गुण गरिमा में
जिनके समान जिन्हें छोड़ कोई और नहीं
माता है मेरी वे।

''परिमल''

निराला ने सदियों से उपेक्षित नारी को विराटता और औदात्य प्रदान किया है। नारी को वे पुरुष के समान एवं समकक्ष स्थापित करने का आजीवन अथक प्रयास करते रहे हैं। निराला के अनुसार– पुरुष अपने दृष्टिकोण में बड़ा संकुचित है, क्योंकि ''हम सबकी स्त्रियों की तरफ देखे, हंसी मजाक करें, पर हमारी स्त्री दिन रात हमारे ही ध्यान में डूबी रहे। **''प्रबन्ध प्रतिमा''**

निराला का विचार है कि नारी कभी कोमलता की प्रतीक रही होगी परन्तु आज की आव''यकता को देखते हुए उसे पुरुष के समान ही जीवन क्षेत्र में उतरना चाहिए। उसी मात्रा में संघर्ष होना चाहिए। उनमें कोमल और कठोर दोनों भावों का समान रूप से विकास होना चाहिए। निराला के शब्दों में– ''अब दोनों के लिए एक ही धर्म होना चाहिए। पुरुष के अभाव में स्त्री हाथ समेट कर नि''चेष्ट बैठी न रहे। उपार्जन से लेकर संतान पालन, गह कार्य आदि वह संभाल सके। ऐसा रूप, ऐसी ि"ाक्षा उसे मिलनी चाहिए। पहले दोनों के भाव और कार्य अलग–अलग थे, अब दोनों भाव और कार्यो का एक ही में साम्य होना आव''यक है।'' निराला चाहते थे कि स्त्रियां अपने निर्वासन से बाहर आयें और सामाजिक दायित्वों को बिना किसी भय या आ''ांका के निभायें। इसके लिए उन्होंने उचित ि"ाक्षा–दीक्षा को अनिवार्य माना। नारी कहीं भी गुमराह न होने पाये, अपने आद''ार्ो से च्युत न हो, मानसिक दृष्टि से उसका विकास हो। ि"ाक्षा–दीक्षा अच्दी मिले जिससे वह अपने घर–बाहर की जिम्मेदारियों को साहसपूर्ण ढंग से वहन कर सके, परन्तु पि"चम की नकल न करें, इस ओर भी निराला ने अगाह किया।

बदलती हुई परिस्थिति के अनुरूप नारी के रूप में परिवर्तन आना जरूरी है। ''अब घर के कोने में समाज तथा धर्म की साधना नहीं हो सकती है'' जमाने ने रुख बदल दिया है। हमारे दे''ा की

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

लड़कियों पर बड़े–बड़े उत्तरदायित्व आ पड़े हैं। उन्हें वायु की तरह मुक्त रखने में ही हमारा कल्याण है तभी वे जाति, धर्म तथा समाज के लिए कुछ कर सकेगी। ''प्रबन्ध प्रतिमा'' पर्दा प्रथा का विरोध करते हुए वे कहते हैं कि– आज तक जितने अत्याचार, बलात्कार हुए है, वे सब पर्दान"ीन स्त्रियों पर हुए हैं।

इन तमाम नारी के उदात्त चरित्र को उदाहरण स्वरूप निराला काव्य संग्रह में देखा जा सकता है। इस दृष्टि से परिमल, विधवा, तोड़ती पत्थर, बहु, तुलसीदास आदि कविता उल्लेखनीय है। निराला ने विधवा का अत्यन्त उदात्त चित्र खींचा है।

वह इश्टदेव के मन्दिर में पूजा सी,
वह दीप f"ाखा सी भाान्त, भाव में लीन,
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा सी,
वह टूटे तरु की छुटी लता सी दीन,
दलित भारत की ही विधवा है।

''परिमल''

निराला ने इस कविता के द्वारा विधवा के विषय में युग–युग से चली आती कुत्सित धारणा को निर्मूल कर दिया भारतीय विधवा लांछन की प्रतीक, अमंगल की मूल, अप"ागुन की उद्‌गम, कलंक की कलमुही और दु"चरित्रता की पुंज समझी जाने वाली विधवा को इष्टदेव की मन्दिर की पूजी सी प्रतिष्ठित करके उसे श्रद्धा की अधिकारिणी बना दिया। जहां एक ओर विधवा को दयनीय स्थिति का पता चलता है वहीं दूसरी ओर सामाजिक तिरस्कार और निष्ठुरता का भी बोध होता है।

''नारी मुक्ति और जागरण'' निराला के काव्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे परम्परागत अवरोधों को मिटाकर पार्वती रूपी नारी को स्वाधीन करना चाहते हैं क्योंकि सत्य, f"ाव और सुन्दर की स्थापना इसके बिना सम्भव नहीं है, वह कहते हैं–

तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा
पत्थर की, निकली फिर
गंगा जल–धरा।
गृह–गृह की पार्वती
पुनः सत्य–सुन्दर–f"ाव को संवारती।
उर–उर की बनी आरती
भ्रान्तों की नि"चल ध्रुव तारा
तोड़ो, ताड़ो, तोड़ो कारा।।

''अनामिका''

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

निराला की नारी भावना का सार्थक उद्घाटन ''तोड़ती पत्थर'' का उल्लेख किये बिना नहीं हो सकता। सन् 1937 में लिखी गयी यह रचना निराला काव्य की वि"ोष दि"ा की संवाहिका कही जा सकती है। इसमें इलाहाबाद की सड़क पर ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप में पत्थर तोड़ती हुई एक निर्धन मजदूरनी का चित्रण किया गया है। उसकी असहायता, विव"ाता और निर्धनता का बड़ा कारुणिक चित्र उभर कर सामने आता है तथा वर्तमान व्यवस्था के प्रति भी तृष्णा की भावना भर देता है। यहां निराला सर्वहारा दलित वर्ग, श्रमिक वर्ग के मसीहा नज़र आते हैं।

इस कविता में उपभोक्ता संस्कृति पर कुठाराघात किया गया बड़ा तीव्र व्यंग है। मजदूरिन जहां सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है जो वस्तुतः शोषित है वहीं तरु मल्लिका, अट्टालिका, प्राकार है शोषक का। इस वैषम्य भाव में निराला ने जो जीवंतता उत्पन्न की है वह बेमिसाल है।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार
सामने तरु मल्लिका, अट्टालिका प्राकार।
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृश्टि से
जो मार खा रोई नहीं।

वस्तुतः पत्थर तोड़ती की इस प्रक्रिया में निराला की सक्रिय भागीदारी है। वे इस प्रक्रिया के मात्र मूक द"ार्क नहीं बने रहते। बल्कि इसके माध्यम से शोषकों पर स्वयं प्रहार करते है, व्यवस्था की इस जड़ता को भंग करने के लिये संकल्प"ील होते है। इस कविता में सामाजिक बोध का परिचय दिया मजदूर युवती अकेले नहीं है, वह पूरे वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। **डॉ0 रामे"ाकुंतल मेघ** ने इस कविता पर विस्तार से विचार करने के बाद ही इस निष्कर्ष पर पहुंच कर इस कविता को महाकाव्यात्मक छोटे आकार के बावजूद सम्भावनाओं से परिपूर्ण बताया है।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि ''तोड़ती पत्थर'' कविता खड़ी बोली काव्य में समाजवादी यथार्थ को सर्वप्रथम रचनात्मक धरातल पर चरितार्थ करने वाली पहली रचना है। इस कविता में नारी के प्रति सहज संवेदना है उसके संघर्ष और श्रम का उदात्त पीठिका प्रदान की गयी है। यहां पत्थर रूढ़िग्रस्त सामाजिकता का प्रतीक है जिसमें श्रम करने वाले उपेक्षित निराश्रित हैं। श्रमिक के हाथ में हथौड़ा केवल

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

पत्थर नहीं तोड़ रहा है बल्कि विषमता ग्रस्म व्यवस्था को भी तोड़ रहा है जिसके प्रतीक बड़े–बड़े महल अट्टालिकायें हैं।

निराला पचास साल पहले जैसे प्रासंगिक थे वैसे आज भी हैं, सवाल उन्हें पूजने का नहीं बल्कि उनसे सीखने का है चाहे उनका गद्य साहित्य हो या पद्य साहित्य। एक अन्य आलोचक ने इस सन्दर्भ में भी उचित ही कहा है कि– **संस्कृति के सूत्र नारी के हाथों में देकर निराला नि"चत हो गये हैं, क्योंकि वही अपने चैतन्य से पुरुश की जड़ता को चुनौती दे सकती है।''**

निराला की अब तक कुल चौदह काव्य कृतियां प्रकाि"त हो चुकी है– प्रथम अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), द्वितीय अनामिका (1937), तुलसीदास (1938), कुकुरमुत्ता (1942), अणिमा (1943), बेला (1946), नये पत्ते (1946), अर्चना (1950), आराधना (1953), गीतगुंज (1954), संध्या काकली (1969), असंकलित कवितायें (1981)।

''रानी और कानी'' नये पत्ते की पहली कविता है। कुरूपता और निर्धनता एक लड़की के लिये अभि"ाप साबित होती है जबकि वह श्रम"ाील विनम्रता से युक्त तमाम गुणों से मण्डित है सम्पन्न है। रानी के इस चित्र में कवि के करुण दृष्टि का परिचय मिलता है और इस कारण कविता अपनी संवेदन"ाीलता और मर्मस्पि"ाता में अत्यन्त भावुक हो उठी है इसमें कवि ने अपने भावुक नज़रिये पर प्रहार किया है। जो शारीरिक सौन्दर्य के गणों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्व देता है। रानी की मां इस लिये अत्यधिक चिन्तित है। मां की इस चिन्ता से दुखित हो रानी भी रो पड़ती है। ''रानी और कानी'' कविता में कवि ने जन सामान्य की पीड़ा को बड़े सहज ढंग से प्रस्तुत कर सभी के मन को दहना दिया, अभिभूत कर दिया जिसे उन्होंने कविता में इस प्रकार संजोया–

कांपे कुल अंग,
दाई आंख से
आंसू भी बह चले मां के दुख से
लेकिन वह बाई आंख कानी
ज्यों की त्यों रह गयी रखती निगरानी।

'नये पत्ते'

इस कविता में अपना ब्याह न हो सकने की बात सुनकर दांयी आंख से मां के दुख से रोने और बांयी आंख (कानी) से इस करुणा पर जैसे निगरानी रखते हुए चुपचाप रहने में व्यंग की भयानक तीखी और नंगी कटु मार अभिव्यक्ति हुई है।

अर्चना का प्रका"ान वर्ष 1950 है। इसमें निराला की साहित्य सर्जना में एक निर्णायक मोड़ आता है जा निराला अपने जीवन काल में अत्यधिक क्रांतिकारी, संघर्ष"ाील, जुझारू थे वह 1950 के बाद

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अवसादग्रस्त, हता"ा और असक्त हो गये। और यही कारण है कि उनकी रचनाओं में मानवता, श्रृंगार, राष्ट्रप्रेम, प्रकृति चित्रण, नारी भावना अत्यन्त उदास हो गयी है। ''अर्चना'' में आकर निराला की नारी भावना किसी प्रकार की वासना न होकर उपासना केन्द्र बिन्दु हो गयी है।

तन की, मन की धन की हो तुम।
नव जागरण, भायन की हो तुम।
काम कामिनी कभी नहीं तुम।
सहज स्वामिनी सदा रही तुम।
स्वर्ग दामिनी नदी बहीं तुम।
अनयन नयन नयन की हो तुम।

'अर्चना'

निराला एक ऐसा परिवर्तन करना चाहते थे जो केवल ऊपरी न हो, वरन् आन्तरिक हो। वे वि"व में आमूल–चूल परिवर्तन कर वि"व में सुख शान्ति की कल्पना कर रहे थे। युग और परिवे"ा को सही रूप में चित्रित करना उनके काव्य व साहित्य कापरम लक्ष्य है। इसलिये अनुभूति की जो गहराई उनके काव्य में दिखाई पड़ती है वह विरले कवि में होगी। निराला की कविता संघर्ष, विद्रोह, पौरुष और औदात्य की कविता है।

नारी चेतना नारी उत्कर्ष के विविध आयामों से भरा निराला साहित्य अपने में अनूठा हम साहित्य प्रेमियों के लिये ही नहीं बल्कि राष्ट्र, समाज, दे"ा के उत्थान के लिये वरदान है। मैं उन्हें आज अपनी एक स्वरचित छोटी सी कविता **'खमो"ा दीया'** समर्पित करती हूँ–

तुम्हारी यादों में गीत लिखा करूंगी
तुमको भाब्दों में पिरोया करूंगी।
भाव निहित होगा मेरी रागिनी में
मन की आंखों से तुम्हें श्रद्धा समर्पित करती रहूंगी।
ज़िन्दगी, में खु"ियों के रंग घुल पाये नहीं
पन्नों की सतरों में रंग भरती रहूंगी।
ज़िन्दगी के ज़हर को ि"ाव की तरह पीती रहूंगी
आ"ीर्वाद देती रहूंगी दीप की तरह स्वयं जलती रहूंगी।
तुम्हारी यादों में;

'डॉ0 हसीना बानो'

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सन्दर्भित ग्रन्थ–

1. कथा ि"ाल्पी निराला – बलदेव प्रसाद मेहरोत्रा
2. निराला काव्य में मानव मूल्य और द'"ान – डॉ0 देवेन्द्र नाथ त्रिवेदी
3. निराला आत्महन्ता आस्था – दूध नाथ
4. छायावाद के आधार स्तम्भ – डॉ0 हरिचरण वर्मा
5. आचार्य बाजपेयी : हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी
6. प्रसाद निराला अज्ञेय – रामस्वरूप चतुर्वेदी
7. निराला – परिमल
8. निराला – तुलसीदास
9. सं0 प्रेमनारायण टंडन – निराला व्यक्तित्व और कृतित्व
10. निराला – चयन
11. सं0 इन्द्रनाथ मदान – निराला
12. डॉ0 राम रतन भटनागर – निराला और नवजागरण
13. राज कुमार सैनी – साहित्य स्रष्टा निराला
14. निराला की साहित्य साधना – राम विलास शर्मा
15. डॉ0 बच्चन सिंह – क्रान्तिकारी कवि निराला
16. निराला – प्रबन्ध प्रतिमा